सच्चाई से आकर्षित: परमेश्वर की कृपा से परिवर्तित
Attracted by Truth

मैं विज्ञानं द्वारा मोहित था. मैं रसायन विज्ञान के अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय में था. मैंने खुद को परिस्थितियों के एक अजीब मोड़ पर पाया जिसको मैं एक प्रमुख स्वास्थ संकट समझा. मेरे पास कारण था और मैं डरता था की मेरा उज्वल भविष्य और जीवन अचानक समाप्त हो जाएगा.

अचानक कई सवाल मेरे विचारों में बाढ़ के नाई आने लगे. मैं अपनी मजबूरी पर बहुत ही उत्सुक और निराश महसूस करने लगा. मेरा परिवार और मेरे मित्र भी मेरी सहायता नहीं कर सके. चिकित्सिक सहायता तो मेरी पहुँच से दूर था. मैं परमेश्वर के बारे में सोंचने लगा. मैंने याद किया की मेरी माँ हमें परमेश्वर के बारे में बताया करती थी. विज्ञान केवल मौजूद चीजों की खोज हैं, लेकिन वह ब्रहमां और जीवन के उद्देश्य और मूल की व्याख्या नहीं करता. मैं इस अस्तितिव और जीवन की स्रोत को जानना चाहता था - विशेष रूप से अपने अस्तित्व का उद्देश्य. तो मेरा खिचाव उस पुस्तक के विश्लेषण की ओर हुआ जो अस्तित्व और जीवन की शुरुआत का लेखा देता हैं. वह पुस्तक बताती हैं कि ब्रहमां पूर्ण रूप से अस्तित्व में आया लेकिन कहीं कुछ गलत हो गया. वह परमेश्वर के श्राप के अंतर्गत आ गया. परमेश्वर ने पृथ्वी को ऐसा श्रापित किया कि "आदमी को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए जीवन भर मेहनत करना पड़ेगा.....तब तक जब तक वह पृथ्वी में फिर नहीं समां जाता. वह मिट्टी से बना हैं और वापस मिट्टी ही बनेगा".

मैं चकित रह गया कि वैज्ञानिक प्रगति के इतने वर्ष पश्चात भी हम उस श्राप और शर्तों के आधीन हैं. यह मुझे एहसास दिलाया कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली हैं और वह जो कहता हैं वही होता हैं. आदमी आराम चाहता हैं और मेहनत और मृत्यु के अभिशाप से भागने कि कोशिश करता हैं लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं मिला. इससे मुझे एहसास हुआ कि मुझे सृष्टि करने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य हैं लेकिन मैं उन सभी पुरुषों कि स्थिति में नहीं हूँ. जो श्राप परमेश्वर ने सदियों पहले मनुष्य पर लगाया था, उसने भी मुझे भयभीत किया हैं. जब यह एक बुरी खबर कि तरह लगता हैं, मुझे एहसास हुआ कि यह जीवन का एक ठोस सत्य हैं. और मैं इस सच्चाई का खोज इस पुस्तक में लिखित परमेश्वर द्वारा कही गयी बातों से करना चाहता था.

मैं अपनी कहानी का लेखा देना चाहता हूँ कि कैसे यह घटना घटी और मैंने कैसे परमेश्वर को व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता के रूप से जाना.

मैं चार बच्चों में दूसरा था. मेरे माता पिता विनायक नाम के एक हिन्दू भगवान् कि पूजा करता थे. हम देवी दुर्गा कि भी पूजा करते थे क्यूंकि उसे साहस कि मूरत के रूप में जाना जाता था. एक ऐसे समुदाय के रूप में जो 'पद्मशाली' नामक एक विशेष जाती के हो, हम कई त्यौहार मनाते थे -

संक्राति १, दशहरा २, और दीपावली ३. मैं अपने मित्रों को स्थानीय मंदिर पर इकठ्ठा करता और देवी दुर्गा के एक महान जुलूस में भाग लेते थे.

विनायक भगवान् का उत्सव बहुत ही लम्बा हुआ करता था. दस लम्बे दिनों तक शाम के समय सार्वजनिक घटनाएं हुआ करती थी जहाँ हर रोज धार्मिक कार्यक्रम और दस दिन तक हर रोज शाम को गाना बजाना भी होता था. इस त्यौहार का समापन विनायक कि विशाल प्रतिमा का स्थानीय तालाब में विसर्जन से होता था. एक और त्यौहार बहुत ही धूम धाम और उत्साह के साथ मनाया जाता था, और वह था बत्काम्मा का त्यौहार. यह वह अवसर था जब हमारे परिवार के सदस्य जिसमे तीन बहने और बहनोई आते और इन त्योहारों को मनाते थे. मेरा विस्तृत परिवार जिसमे मेरी चचेरी बहने भी हमारे घर आती और हम इन त्योहारों का आनंद उठाते थे. मैं उन मीठी यादों को भुला नहीं पाया.

हम बत्काम्मा (एक स्थानीय देवी) का त्यौहार भी मनाया करते थे. यह आम तौर पर स्थानीय फसल के मौसम में जो सितम्बर और अक्टूबर में मनाया जाता था, 'अस्वियुजा सुद्धा दसमी'. महिलायें अपने पतियों के लम्बी उम्र के लिए प्रार्थना करती हैं. यह समारोह काष्ठफलक पर सजाये रंगीन पुष्पों से बहुत ही रंगीन होता था. इस त्यौहार से जुड़ा हुआ नाच गाना भी हुआ करता हैं. महिलाए चाहे जवान हो या वृद्ध, बत्काम्मा कि मूर्ती को नदी पर या मंदिर पर ले जाया करती थी और वहां वे नाचती और उस देवी कि प्रशंसा में गीत भी गाती थी. निजी तौर पर मुझे बहुत ही आनंद आता था क्यूंकि मुझे इस त्यौहार पर नए कपडे आते और स्थानीय तालाब के पास आतिशबाजी कि चकाचौन्द प्रदर्शन को देखता.

१९८७ का वर्ष था, टेलीविजन गाँव में उतना आम नहीं था. गाँव के विद्यालय में ही एक टेलीविजन हुआ करता था. सारे बच्चे हर शनिवार शाम को प्रचारित पिक्चर देखने विद्यालय जाया करते थे. मेरा एक और मनोरंजन था कृषि क्षेत्र में स्थित पानी के कुवे में तैरना. मुझे स्थानीय तालाब में मछली पकड़ना भी अच्छा लगता था. मैं और मेरे मित्र पास के जंगल में बत्काम्मा के त्यौहार के लिए शरीफा और जंगली फूल लेने भी जाया करते थे.

मेरे माता पिता काफी गरीब थे और शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके. एक परिवार के रूप में सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें काफी संघर्ष करना पड़ा. पिताजी एक छोटे से टैक्सी 'आटोरिक्शा' के ड्राइवर थे. जब मैं सोलह वर्ष का हुआ तब मैंने भी आटोरिक्शा चलाना सीखा. इसके माध्यम से कुछ वर्षों पश्चात मुझे पैसा कमाने में भी मदद मिली.

मेरी माँ गंभीर सरदर्द और ह्रदय रोग से पीड़ित थी. उन्होंने चिकित्सिक सहायता की खोज की परन्तु अस्थायी राहत के अलावा उनको उसका पूरा इलाज नहीं मिला. लेकिन एक दिन एक व्यक्ति हमारे घर आकर उन्होंने हमारी माँ के लिए यीशु से प्रार्थना की. मेरी माँ को तुरंत चंगाई प्राप्त हुई. उनको अब सिर दर्द नहीं होता था और ह्रदय रोग से भी चंगाई प्राप्त हुई. इस कारण मेरी माँ ने उन्हें चंगा करने वाले यीशु पर विश्वास किया. कुछ साल बाद मेरे पिता ने भी यीशु पर विश्वास किया और उनसे प्रार्थना करने लगे. हमारी माँ हम बच्चों को भी रात में सोने के पहले प्रार्थना में बैठाती थी. हमारी माँ का बहुत ही प्यारा व्यक्तित्व था और वे सारे पड़ोसियों से भी प्यार से रहती थी.

हमारे गाँव में हमारे जाती के सदस्यों में से किसी ने भी यीशु पर विश्वास नहीं किया था. अब हम ८ अलग परिवार के साथ मिलकर हर रविवार को प्रार्थना करते थे. इन अवसरों पर लोगों को बाइबल पढने को आमंत्रित किया जाता था. मैं बड़ी ही उत्सुकता से ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करता था. लेकिन मैं आध्यात्मिक अर्थ को समझे बिना बचकाने उत्साह से पढता था. मैं कभी भी परमेश्वर के बारे में नहीं सोंचता था और न ही आध्यात्मिक बातों पर ध्यान देता. कोई अध्यात्मिक प्रश्न भी नहीं उठे.

जब मैं उम्र में परिपक्व हो रहा था, मैं अपने समुदाय के विभिन्न सामाजिक भेद को मानने लगा. जाती के कारण सामाजिक भेदभाव के मुद्दे का मुझे एहसास होने लगा. मैं सोंचने लगा की क्यूँ विभिन्न लोगों के बीच में भेदभाव हैं जबकि परमेश्वर सिर्फ एक हैं. जब मैंने अपनी दसवी कक्षा को ख़त्म किया, कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मैं पास के सूर्यापेट नामक शहर को गया. उसके पश्चात मैंने रसायन विज्ञान में काकतीय विश्वविद्यालय, वरंगल से अपनी मास्टर डिग्री को प्राप्त किया.

जब मैं वहां पर था, मेरे एक दोस्त ने मुझे उसकी माँ को रक्त दान देने को अनुरोध किया. वे ऐसी सर्जेरी करा रही थी जिसमे रक्त आधान की आवश्यकता थी. मैं अपने मित्र के साथ अस्पताल रक्त दान करने गया. जब मेरा रक्त लिया गया, प्रयोगशाला परीक्षणों का संकेत मिला की मुझे एक लीवर की समस्या थी (पीलिया) जिससे मेरे खून के इस्तेमाल होने पर रोक लग गयी. यह पता चलते ही मैं चौंक गया. मुझे मालूम था की कई लोग पीलिया से गंभीर रूप से बीमार पड़ चुके हैं और उनकी मृत्यु भी हो चुकी हैं. प्रयोगशाला के व्यक्ति ने मुझे बताया की मेरे पीलिया की स्थिति बहुत ही गंभीर थी और मुझे तत्काल चिकित्सा उपचार लेने की सुझाव दी गयी. तत्काल नियुक्ति के लिए कोई डाक्टर उपलब्ध नहीं थे.

इस सप्ताह के दौरान, मैं बहुत डरा हुआ, चिंतित और उदास था. मुझे चिंता थी की यह एक जीवन और मरण की स्थिति हो सकती हैं? मुझे खेद था की मैंने अपने स्वास्थ की इतने सालों तक उपेक्षा की. मेरे मित्रों ने भी मुझे डांटा की मैंने इतना लम्बा समय इंतज़ार किया था. मैं चिंता और गहरी पूछताछ की इस अवधि में था, जब मुझे मेरी माँ की यीशु की बातें स्मरण में आई.

मैं सच्चाई जाने के गंभीर इरादे से बाइबल पढने लगा. यह अब सिर्फ एक शैक्षिक मुद्दा नहीं बरन एक व्यक्तिगत जरूरत भी बन गया था. तार्किक शुरुआत के बारें में मैं पढने लगा. मुझे पता चला की शुरू के पन्नो ने निर्माता के रूप में परमेश्वर की महानता की मेरी समझ को खोला. उन्होंने पृथ्वी, स्वर्ग और जीवित चीजे, महासागर, सूरज और चाँद, और अंत में आदमी (आदम और हव्वा) बनायीं. उन्होंने आदमी की सृष्टि कर सारे जीवों पर अधिकार भी दिया.

ऐसा लगता हैं परमेश्वर ने सब कुछ श्रेष्ठ बनाया लेकिन आदमी ने सब गड़बड़ कर दिया. सृष्टिकर्ता की पूजा करने की बजाय आदमी सृष्टि की पूजा करने लगा. यह ऐसा रूप लिया की मूर्ति जैसी निर्जीव वस्तु की भी पूजा होने लगा.

पूरी तरह से, मेरा दिमाग बदल जाता हैं, जब मैं इन सारी बातों को सोंचता हूँ की परमेश्वर ने बाइबल में आदम को यह कह कर श्राप दिया की.

"तू इसकी उपज जीवन भर दुःख और मेहनत पसीने के साथ खायेगा"

और हव्वा को श्राप देते हुए कहा

" मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी".

इतने सालों बाद भी मानव की वर्तमान स्थिति नहीं बदली. विज्ञान के क्षेत्र में इन सभी अग्रिमों में मनाव के विकास और खोज के बावजूद, श्राप अभी भी मौजूद हैं.

मृत्यु के भय से, मैं परमेश्वर को जानना चाहता था. मैं पीलिया से पीड़ित, उज्जवल भविष्य की मेरी उम्मीद समाप्त होने लगी.

मैं यीशु से प्रार्थना करना चाहता था की वे मेरी सहायता करे और मुझे चंगाई दे. तुरंत मैं रक्त परिक्षण के लिए गया, और मेडिकल रिपोर्ट से पता चला की मैं सामान्य स्वास्थ में हूँ. मुझे

विश्वास हुआ की यीशु ने मेरी प्रार्थना सुनी हैं. उससे ज्यादा मेरा डर और चिंता ख़त्म हो गया था. उस समय मैं पाप के प्रति उतना सचेत नहीं था पर मैंने उस सच्चे परमेश्वर की शक्ति को देखा था.

मैंने वह पुस्तक पढना आरंभ किया और समझ पाया की परमेश्वर मुझसे प्यार करता हैं और मेरे पापों को भी क्षमा करता हैं. समय के साथ मुझे पता चला की मेरे भीतर ऐसी बहुत सी चीजे हैं जो परमेश्वर के खिलाफ हैं और मेरा उनसे संघर्ष चल रहा हैं. मुझे एहसास हुआ की मेरे भीतरी स्वभाव में, वास्तव में एक सच्चे जीवन जीने का संघर्ष हैं.

अपने दैनिक जीवन में, मैं बहुत लापरवाही से उन छोटे छोटे झूठ बोल देता था जो मेरे दिनचर्या के एक हिस्सा बन चुकी थी. अब मैं तीव्रता से अवगत हुआ की इन छोटे झूठों ने मुझे दूसरों से डरने पर मजबूर किया. परमेश्वर मेरे ह्रदय को देखता हैं और जब मैं अपनी असत्यता को कबूल करता हूँ तो वह मुझे क्षमा भी करता हैं. वह मुझे सच बोलने के लिए आत्मविश्वास और साहस भी देता हैं. मेरा दिल बहुत हल्का महसूस होता हैं. पहले मैं लोगों को खुश करने के लिए इतना प्रेरित था की झूठ भी बोल जाता था लेकिन अब सच बोलना चाहता हूँ क्यूंकि मैं सिर्फ परमेश्वर को खुश करना चाहता हूँ. लोग मेरे अन्दर के दिल को और न ही झूठ को देख सकते लेकिन परमेश्वर सबकुछ देखता हैं. मुझे लोगों के समक्ष और परमेश्वर के समक्ष महान स्वतंत्रता के एहसास होता है.

अब मेरा एक नया स्वभाव हैं क्यूंकि मैं अपने उप्पर नहीं पर परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ. उनका स्वभाव मेरे स्वभाव का हिस्सा बन रहा हैं. मैं उनके बारें में और अधिक जान पा रहा जब मैं इस पुस्तक में उनके शब्द को पढता हूँ.

उन्होंने मुझे आतंरिक ख़ुशी और एक नयी इच्छा भी दी हैं, हालांकि मुझे अपनी गलतियों को भी कबूल करना होता हैं. लेकिन मैं प्रार्थना करता हूँ की परमेश्वर मुझे सामर्थ और बल दे.

जब मैं यीशु से प्रार्थना करूँगा मैं जानता हूँ की वह मेरी प्रार्थना का उत्तर देगा.

मसलन, एक प्रमुख निर्णय जो मुझे लेना था वह मेरी शादी के मुद्दे को लेकर था. हमारे परिवार के परंपरा के अनुसार हमारे माता पिता ही शादी तय करते हैं. मैं शादी के बारें में सोंचने लगा क्यूंकि मेरे सारे भाई और दो बहनों की शादी हिन्दू पृष्ठभूमि में हुई थी और मुझे सोंचना था की मैं मूर्तियाँ पूजते हुए मैं हिन्दू विवाह करूँ या फिर एक इसाई विवाह. मैंने परमेश्वर से इस समस्या का समाधान करने को कहा, मैंने उनसे कहाँ की वे मेरी शादी ऐसी लड़की से कराये जो उनपर विश्वास करती हैं. जब मैंने ऐसा प्रार्थना किया, तब उन्होंने मुझे अद्भुत रीति से उत्तर दिया, उन्होंने मुझे एक विश्वासी, सुन्दर और ख़ासकर एक सक्षम पत्नी दी.

मैं अपनी पत्नी शकुंतला के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ. २००४ में परमेश्वर ने हमें अभिषेक, एक पुत्र से आशीष दिया.

बाइबल कहती हैं,

"सक्षम पत्नी कौन पा सकता हैं? क्यूंकि उसका मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक हैं"

मेरे कैरियर के लक्ष्य/मार्गदर्शन के उत्तर

इससे पहले की मैं अपनी गवाही खत्म करूँ, मैं आपके साथ उनसे प्राप्त कुछ आशीषित इनाम के बारें में बताना चाहता हूँ. जब मैं पुराने दिनों के दौरान मुझपर उनकी कृपा के बारें में सोंचता हूँ तो मुझे बहुत आश्चर्य और अद्भुत लगता हैं. उन्होंने अपनी योजना के अनुसार मुझे अपना बेटा के रूप में चुना हैं.

प्रभु यीशु ने मेरी जूनियर इंटरमीडिएट और बी एस सी डिग्री कॉलेज में मुफ्त दाखिला मिलने में मेरी मदद की जबकि मेरे पास अच्छे प्रतिशत अंक नहीं थे. मैं इतना उदास स्थिति में था जब मुझे बी एड में सीट नहीं मिला. उस परिस्थिति में, एक महीने बाद रात के ग्यारह बजे मुझे एक तार प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि 'आप तुरंत आकर हैदराबाद के बी एड कॉलेज में शामिल हो जाईये. वह दिन इतनी ख़ुशी का था कि मैं सो नहीं पाया, मैं बहुत खुश था मैं कभी नहीं भूल सकता. इतना ही नहीं परमेश्वर ने मुझे वरंगल में एम् एस सी कि मुफ्त कैम्पस सीट भी दिलाया. सारी भरती प्रक्रिया होने के बाद वह सबसे आखिरी सीट था. २००१ में परमेश्वर ने हैदराबाद के प्रसिद्द अनुसंधान संसथान में पि एच डी करने के लिए मार्गदर्शन भी किया. २००६ में परमेश्वर ने बाइबल से मुझे यह प्रतिज्ञा दी:

बाइबल बताती हैं:

"जो येहोवा कि बात जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जायेंगे, वे उकाबों के सामान उड़ेंगे"

मैंने कभी नहीं सोंचा था कि मैं अमेरिका जाऊँगा. परमेश्वर ने द्वार खोला कि २००६ में पोस्टडोक्टोरल अनुसंधान पूरा करने के लिए मैं क्लार्क विश्वविद्यालय, वोर्सस्टर, अमेरिका जाऊं. उसी वर्ष में चोरों ने मेरे पत्नी के घर में मेरी पत्नी और उनकी माँ को चक्कू से डरा कर ४०,०००

मूल्य सोना चुरा लिया. लेकिन हैरत कि बात हैं कि परमेश्वर ने उतना ही पैसा कुछ महीनों बाद पुलिस विभाग के द्वारा लौटा दिया. जब हम हैदराबाद में थे, तो एक बार फिर हमने पैसा और सोना मूल्य ३०,००० खो दिया. आप जानते हैं क्या हुआ, हाल ही में जब मैं अमेरिका में था, पुलिस ने हमें फ़ोन किया और बोला कि आप आकर अपना पैसा ले जाईये. देखा परमेश्वर कितना भययोग्य, अद्भुत और प्रेमी परमेश्वर हैं. वह ऐसा परमेश्वर हैं जिसपर हम अपनी सारी चिंता, दुःख और अपने सारे योजनाये डाल कर विश्राम कर सकते हैं. बाइबल बताती हैं

"हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हे विश्राम दूंगा. मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझसे सीखो; क्यूंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे".

यही कारण हैं जिससे मैं और मेरी पत्नी ने अपने खोये हुए पैसों के बारें में चिंता नहीं कि, लेकिन परमेश्वर पर अपना बोझ डाल दिया. इस रीति से परमेश्वर ने हमें बहुतायत रूप से आशीष दी हैं, हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया हैं और अपनी अनुग्रह में रखते हुए हमें किसी बात कि कमी नहीं होने दी.

भविष्य और जीवन लक्ष्यों/आशा के प्रति मेरी दृष्टिकोण

मैंने उन्हें नहीं चुना था, बल्कि उन्होंने मुझे चुना था, और जब मैं जानता नहीं तब भी उन्होंने मुझे कभी नहीं भूला. जब मैं अपनी माँ के कोख में तबसे वह मुझे जानता हैं. हालांकि मैं पापी था, तोभी उसने मुझे नहीं छोड़ा. मैं उसकी अद्भुत करुणा के लिए उसका धन्यवाद करता हूँ और मैं आप सबने जिसने मेरी यह छोटी सी गवाही को पढ़ी उनका भी धन्यवाद करता हूँ. मैं आशा करता हूँ कि आप सब भी यीशु के द्वारा प्राप्त उद्धार को अवश्य चखेंगे.

मैं अपने जीवन में परमेश्वर से यही माँगूगा, "मेरे जीवन के हर क्षण, हर मिनट, हर घंटा, हर दिन, हर महिना और हर वर्ष में आपकी ही इच्छा पूरी हो". मुझे यकीन हैं कि हमें उसके पुनरुत्थान के लिए इंतज़ार करना होगा, ताकि हम सब भी उनके साथ उठ कर अनंत जीवन में प्रवेश कर सके. यही मेरी आशा, हमारी आशा और विशवास हैं उनपर.

पवित्र आत्मा हमेशा हमारी अगुवाही करे. अमीन

सन्दर्भ:

१. संक्राति भारत भर में फसल के उत्सव के रूप में मनाया जाता हैं. प्रकृति के तत्वों को फसल उपजाने में उनकी मदद के लिए यह धन्यवाद देने का एक तरीका हैं. यह तब होता हैं जब सर्दियां समाप्त होने को होती हैं, और गर्मियां शुरू होने को रहता हैं. इस समय किसान फसल को घर लाते हैं.

२. दशहरा- देवी दुर्गा को साहस और शक्ति का अवतार माना जाता हैं और इस देवी कि पूजा करने से इंसान भी इन सारी गुणों से भरपूर होता हैं, खासकर दशहरा के दौरान. यह त्यौहार इस बात का प्रतीक हैं कि दुर्गा ने दानव को मार डाला था. इस शुभ दिन पर, संगीत वाद्ययंत्र के साथ देवी कि प्रतिमाओं का जुलूस निकाला जाता हैं.

३. दीवाली जिसे दीपावली भी कहते हैं, एक परंपरागत नाम दिया गया हैं 'दीयों का त्यौहार' क्यूंकि सैंकड़ों और हजारों छोटे छोटे तेल के दीये कई परिवारों द्वारा जलाए जाते हैं. इसके अलावा हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान् राम ने दुष्ट रावण को मार डाला था.

४. बुर्रकथा, भारत के आंध्र प्रदेश और तमिल नाडू के गाँवों में कहानियाँ बताने कि एक तकनीक हैं. मंडली में एक मुख्य कलाकार और दो सह कलाकार होते हैं. यह एक मनोरंजन का कथन हैं, जिसमे प्रार्थना, नाटक, नृत्यु, कविताएं, गीत और चुटकुले होते हैं. विषय या तो हिन्दू पौराणिक कथाये में से होंगी या फिर एक समकालीन सामाजिक समस्या.

उत्पत्ति ३: १६-१९

ए पि,
हैदराबाद, भारत और वोर्सस्टर, एम् ए, यु एस ए